B.A. Sanskrit (Generic)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
सत्र- पंचम

आधारभूत पत्र (Core paper) **Paper Code BSA- G 511**	**संस्कृत में राजनैतिक विचार**	**पूर्णाङ्क 100** **सत्रान्त परीक्षा : 70** **सत्रीय मूल्याँकन : 30** **क्रेडिट : 06**

खण्ड- क (Section-A) प्राचीन भारतीय राजनीति की मूल विशेषताएँ एवंविचार
खण्ड- ख (Section-B)प्राचीन भारतीय राजनैतिक विचार: उत्पत्ति और विकास
खण्ड- ग (Section-C)प्राचीन भारतीय राजनैतिक विचारकों के प्रमुख सिद्धान्त

पाठ्यक्रम का उद्देश्य -

धर्मशास्त्र में भारतीय राजनीति के मूलभूत सिद्धान्त की चर्चा प्राचीन भारत के विज्ञान की शाखा के रूप में की गयी है । इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक संहिता, महाभारत, पुराण, कौटिल्य अर्थशास्त्र एवं अन्य नीति शास्त्र में वर्णित प्राचीन भारत के राजनैतिक चिन्तन से अवगत कराना है ।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम(Course Outcomes)-

- इस पत्र के अध्ययन से छात्र प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारों से अवगत होंगे ।
- संस्कृतगत विशुद्ध राजनीतिक ज्ञान से छात्र राजनीतिक में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करने में समर्थ होंगे ।

  राजनीतिक ज्ञान से सम्पन्न छात्र राष्ट्र को समुचित नेतृत्व प्रदान कर सकेंगे ।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)

प्राचीन भारतीय राजनीति की मूल विशेषताएँ एवं विचार

घटक (Unit)- 1 – प्राचीन भारतीय राजनीति के विचार व नाम, स्रोत और क्षेत्र नाम : 'दंडनीति" धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र । भारतीय राजनैतिक विचार का दायरा :धर्म, अर्थ और नीति से संबंध; प्राचीन भारतीय राजनैतिक विचार के स्रोत: वैदिक साहित्य,

पुराण, रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, कौटिल्य का अर्थशास्त्र और राजाशासन (शिलालेख)।

घटक (Unit) –2 - राज्य की प्रकृति, प्रकार और सिद्धान्त: अर्थशास्त्र में राज्य की प्रकृति (6.1) मनुस्मृति में

विशेष संदर्भ के साथ (9.294) सप्तांग - सिद्धान्त; स्वामी, अमात्य, जनपद, पुर, कोष, दण्ड और मित्र।

राज्य के प्रकार: राज्य, स्वराज्य, भोज्य, वैराज्य, महाराज्य, साम्राज्य (ऐतरेय ब्राह्मण) 8.3.13-14; 8.4.15-16)।

खण्ड –ख (Section–B)

प्राचीन भारतीय राजनैतिक विचार: उत्पत्ति और विकास

घटक (Unit) –1- भारतीय राजनैतिक विचार वैदिक काल से बौद्ध काल:, वैदिक काल में लोगों द्वारा राजा का चुनाव एवं प्रदर्शन, (ऋग्वेद, 10.173; 10.174, अथर्ववेद, 3.4.2, 6.87.1-2), वैदिक काल में संसदीय संस्थाएँ: 'सभा, समिति और विदथ (अथर्ववेद - .०७.१२.१; १२.१.६; ऋग्वेद - १०. ८५.२६), वैदिक काल में राजा-निर्माता परिषद: राजकर्ता, और पत्नी (अथर्ववेद-3.5.6-7, शतपथ ब्राह्मण-5.2.5.1), राजा का राज्याभिषेक समारोह शतपथब्राह्मण, 51.1.8-13; 9.4.1.1-5) बौद्ध काल में गणराज्य (दिग्निकाय , महापरिनिर्बाण सुत्त, अंगुत्तरनिकाय १.२१३; ४.२५२,२५६)

घटक (Unit) – 2 (क) भारतीय राजनैतिक विचार कौटिल्य से महात्मा गांधी: कौटिल्य के अनुसार कल्याणकारी राज्य (अर्थ शास्त्र) 1.13), राजा की आवश्यक योग्यता (अर्थ शास्त्र)6.1.16-18), राजा और राज्य के कर्तव्य 'राजधर्म' (महाभारत, शान्तिपर्व, १२०.१-१५, मनुस्मृति- 7.1-15; शुक्रनीति1.1-15), जैन राजनैतिक चिन्तन के संवैधानिक तत्त्व, (सोमदेव के नीतिवाक्यामृत-9.1.18 और, 19.1.10), वर्तमान समय में गांधीवाद राजनैतिक विचारों की की प्रासंगिकता (गाँधी गीता, लेखक प्रो० इंद्र 5-१-२५)

खण्ड–ग (Section–C)

प्राचीन भारतीय राजनैतिक विचारकों के प्रमुख सिद्धान्त

घटक (Unit) 1- विज्ञान के प्रमुख सिद्धान्त , सप्तांग राज्य की थ्योरी: स्वामी, अमात्य, जनपद, पुरा, कोष , दंड और मित्र (अर्थ-शास्त्र-6.1, महाभारत-शान्तिपर्व -56.5, शुक्रनीति, 1.61-62) । मण्डल - 'अंतर-राज्य सम्बन्धों का सिद्धान्त ' षाड्गुण्य सिद्धान्त - युद्ध और शांति की कूटनीति की नीति सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय, द्वैधीभाव । चतुर्विध उपाय - राज्य की शक्ति को संतुलित करने के लिए - साम , दाम , दंड, भेद । तीन प्रकार की राज्य शक्ति 'शक्ति': प्रभु शक्ति,मंत्र शक्ति, उत्साह शक्ति ।

घटक (Unit) 2 - प्रमुख भारतीय राजनैतिक विचारक - मनु, शुकराचार्य, कौटिल्य , कामन्दक,
सोमदेव सूरी और महात्मा गांधी ।

प्रश्नपत्र निर्माण-प्रारूप-

खण्ड ख के अन्तर्गत सभी खण्डों से विकल्प के साथ कुल पांच समालोचनात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न प्रष्टव्य रहेंगे ।

अंक 05x6= 30

खण्ड ग के अन्तर्गत सभी खण्डों से विकल्प के साथ कुल चार समालोचनात्मक / व्याख्यात्मक दीर्घोत्तरीय प्रश्न प्रष्टव्य होगें ।

अंक 04x10= 40

टिप्पणी खण्ड ख में से दो प्रश्नों तथा ग में से एक प्रश्न का उत्तर संस्कृत में करना अनिवार्य होगा।

Suggested Books/Readings:

1.स्वामी दयानन्द , सत्यार्थ प्रकाश , आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट , दिल्ली ।
2. R.P Kangale (ed.) Arthashastra of Kautilya, Motilal Banarasidas, Delhi, 1965.
3. R.T.H. Griffith (Trans.), Atharvaveda Samhita, 1896-97, rept. (2 Vols) 1968.
4. H.P. Shastri, Mahabharata (7 Vols), London, 1952-59.
5.P. Olivelle (ed. & trans.), Manu's Code of Law: A Critical Edition and Translation of the Manava- Dharamashastra, OUP, New Delhi, 2006.
6. H.P. Shastri (trans), Ramayana of Valmaki (3 Vols), London, 1952-59.
7. H.H. Wilson (trans.), Rgveda samhita (6 Vols), Bangalore Printing & Publishing Co., Bangalore, 1946.
7. Jeet Ram Bhatt (ed.), Satapatha Brahmana (3 Vols), EBL, Delhi, 2009.
8. A.S. Altekar, State and Government in Ancient India, Motilal Banarsidass, Delhi, 2001.

9. S.K. Belvalkar, Mahabharata: Santi Parvam, 1954.
10. D.R. Bhandarkar, Some Aspects of Ancient Indian Hindu Polity, Banaras Hindu University.
11. J.R. Gharpure, Teaching of Dharmashastra, Lucknow University, 1956.
12. U.N. Ghosal, A History of Indian Political Ideas, Bombay, 1959.
13. K.P. Jayaswal, Hindu Polity, Bangalore, 1967.
14. N. S Law, Aspect of Ancient Indian Polity, Calcutta, 1960.
15. S.R. Maheshwari, Local Government in India, Orient Longman, New Delhi,
16. Beni Prasad, Theory of Government in Ancient India, Allahabad, 1968.
17. B.A. Saletore, Ancient Indian Political Thought and Institutions, Bombay, 1963.
18. R. S. Sharma, Aspects of Political Ideas and Institutions in Ancient India, Delhi, 1996.
19. K.N. Sinha, Sovernity in Ancient Indian Polity, London,1938.
20. V.P. Verma, Studies in Hindu Political Thought and its Metaphysical Foundations, Delhi, 1954.
21. उदयवीरशास्त्री (अनुवा.), कौटिलीयीयअर्थशास्त्र, मेहरचंदलक्ष्मनदास, दिल्ली, 1968 ।
22. रामनारायणदासशास्त्री पाण्डेय (अनु.), महाभारत (1-6 भाग) हिंदीअनुवादसहित, गीताप्रेस गोरखपुर
23.स्वामी दयानंद के अनुसार राजधर्म (सत्यार्थ प्रकाश षष्ठ समुल्लास) भारतीय राजनीत